जरूरतों को दें तरजीह, इच्छाएं होती रहेंगी पूरी

हमारी वित्तीय स्थिति को झटका तब लगता है जबकि हमारी इच्छाएं जरूरतों में तब्दील होने लगती हैं और पूरी फाइनेंशियल प्लानिंग गड़बड़ाने लगती है

मणिकरन सिंघल

लक्ष्य तय करना फाइनेंशियल प्लानिंग का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे हमें पता चल जाता है कि अपने संसाधनों का प्रबंधन कैसे करना है। हालांकि ज्यादातर लोगों के लिए यह काफी मुश्किल काम है। जब मैं लोगों को उनके लक्ष्य के बारे में लिखने को बोलता हूं तो वे लिखते हैं बड़ा घर, बड़ी कार, बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा और विदेश की ट्रिप। जब मैं उन्हें जरूरतों और इच्छाओं के बीच का अंतर समझाता हूं और यह बताता हूं कि किस तरह उन्हें अपनी जीवन शैली में बदलाव करके चलना पड़ेगा तभी उन्हें सही परिदृश्य और वास्तविक लक्ष्य का अंदाजा लग पाता है। आपने स्मार्ट लक्ष्यों पर तो कई आर्टिकल पढ़े ही होंगे। इससे आपको जरूरतों और इच्छाओं का फर्क समझ में जाएगा इन्हें पूरा करने में मदद मिलेगी। इससे आपको परिवार के और बजट का प्रबंधन करने में भी काफी मदद मिलती है।

जरूरतों को समझें

रोजाना जीवन जीने के लिए हमें जिन वस्तुओं का इस्तेमाल करना पड़ता है उन्हें जरूरत कहते हैं। इसमें खाना, पानी, घर आदि शामिल हैं। अगर फाइनेंशियल प्लानिंग के लिहाज से बात करें तो कई जरूरतें ऐसी होती हैं जिन्हें नजरंदाज नहीं किया जा सकता। यह कुछ ऐसी चीजें हैं जो आपकी वित्तीय स्थिति को मजबूत बनाने के लिए बेहद अहम है। इसमें आपातकालीन फंड, पर्याप्त इंश्योरेंस कवर, कर्ज को कम करना आदि शामिल है। इन चीजों को मूलभूत जरूरतों में तो शामिल नहीं किया जा सकता पर यह इनसे कम भी नहीं हैं। निजी देख-रेख के खर्च, बच्चों के खर्च, विश्वसनीय यातायात भी मूलभूत जरूरतों में नहीं आते पर इन्हें नजरंदाज करना बेहद मुश्किल है।

इच्छाओं की पूर्ति बिना जिंदगी अधूरी नहीं होती

इच्छा उन जरूरतों को कहते हैं जिनके बिना भी आप रह सकते हैं पर अगर यह पूरी हो जाएं तो आपको बहुत खुशी मिलती है। यह ऐसी जरूरतें है जो कि समाज में आपके स्तर का निर्धारण करती हैं। उदाहरण के तौर पर कार रखना आपकी जरूरत हो सकती है पर अगर आप ऑडी या बीएमडब्ल्यू रखना चाहते हैं, तो यह आपकी इच्छा है। घर होना जरूरी है पर अगर आप पास पेंट हाउस खरीदना चाहते हैं या फिर समंदर के किनारे बंगला चाहते हैं तो यह आपकी इच्छाओं की श्रेणी में आएगा।

इच्छाओं और जरूरतों के बीच संतुलन जरूरी

हमारी वित्तीय स्थिति को झटका तब लगता है जबकि हमारी इच्छाएं जरूरतों में तब्दील होने लगती हैं। वैसे तो इच्छा और जरूरतों में काफी ज्यादा अंतर है पर जब इन अंतरों को प्राथमिकता के आधार पर आंकने की बारी आती है तो ज्यादातर लोगों को दिक्कत होती है। मैने ऐसे कई मामले देखे है जिसमें लोगों ने किसी उत्पाद का केवल विज्ञापन भर देखकर यह मान लिया कि यह उनकी बड़ी जरूरतों में शामिल है। अक्सर यह देखा गया है कि जब आप अपनी जरूरतों को नहीं समझते हैं तो आप इच्छाओं को ही आवश्यकता में गिनने लगते हैं। अधिकतर लोगों के लिए फाइनेंशियल प्लानिंग जरूरतों की श्रेणी शामिल नहीं है पर निवेश है। यही वजह है कि वे ऐसे उत्पाद की तलाश में रहते हैं जिसकी मदद से वे कम वक्त में मोटा पैसा बना सकें।

वास्तविकता यह है कि फाइनेंशियल प्लानिंग के सिद्धांतों का पालन करने से आपकी वित्तीय स्थिति मजबूत होती है। बिना इच्छाओं के जीना अवास्तविक है। इच्छाओं से आपकी कल्पनाशीलता बढ़ती है और इससे संतुष्टि और ऊर्जा मिलती है। दिक्कत तो तब आती है जबकि आपकी इच्छाएं जरूरत की शक्ल लेने लगती हैं। इच्छाएं आपको उग्र बनाती है और ऐसा व्यक्ति सही फैसले नहीं ले सकता। व्यक्ति को अपनी जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए इसके बाद अपनी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास में लगना चाहिए। इसके लिए कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

- रिटायरमेंट के लिए बचत करना बड़ी जरूरत है। आप बच्चों को विदेशी यूनिवर्सिटी में बढ़ाने के लिए पैसे बचाएं पर इसके लिए अपनी रिटायरमेंट बचत के साथ समझौता न करें।
- आप अपनी पहली कार की खरीदारी को जरूरत में तो गिन सकते हैं पर इसके लिए कर्ज के बोझ को बढ़ाने की जरूरत नहीं है। इससे बच्चों के लिए की गई दीर्घकालिक बचत या फिर रिटायरमेंट सेविंग प्रभावित होगी।
- अगर आप अपनी इंश्योरेंस की जरूरतों को नहीं समझते हैं तो मुनाफा कमाने के लिए अलग-अलग पॉलिसी खरीदते रहेंगे। हो सकते ऐसे में आप पर्याप्त इंश्योर्ड न ले पाएं। ऐसी स्थिति में किसी अप्रत्याशित घटना के होने पर आपके के परिवार को अपने खर्चों और लक्ष्यों को पूरा करने में दिक्कत होगी।

आपका वित्तीय भविष्य अब आपके हाथ में है। फाइनेंशियल प्लानिंग इसकी कुंजी है। अपनी जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए आपको अपने वित्त का सही इस्तेमाल करना चाहिए। आप अपनी इच्छाओं को लंबे समय में पूरा कर पाएंगे। आपको इस बात का ख्याल रखना है कि आपको अपनी जरूरतें पहले पूरी करनी हैं। अगर आपकी सभी जरूरतें पूरी हो जाती हैं तो आप आसानी इच्छाएं पूरी कर बिना चिंता के काम कर पाएंगे।

– लेखक सर्टिफायड फाइनेंशियल प्लानर और फाइनेंशियल प्लानर्स गिल्ड इंडिया के सदस्य हैं।

निवेश की जल्द शुरुआत से संवारें बच्चों के भविष्य

बिजनेस भास्कर • नई दिल्ली

घर में नन्हें मेहमान के आते ही लोग उसके भविष्य के सपने संजोने लगते हैं। चाहे वह बच्चा हो या बच्ची, पढ़ाई से लेकर शादी तक के खर्च के लिए लोग सोचना शुरू कर देते हैं। इसके लिए अपनी कमाई के छोटे हिस्से की बचत भी शुरू कर देते हैं। हम सब यही चाहते हैं कि अपने बच्चों को बेहतर से बेहतर शिक्षा उपलब्ध करा सकें। इसके लिए जरूरी है कि हम इसके लिए पहले से ही योजना बना कर चलें कि बच्चों को भविष्य में किस प्रकार की शिक्षा उपलब्ध करानी है, उनकी पढ़ाई किस कॉलेज में करवानी है और उसमें कितने पैसे खर्च होंगे। वर्तमान परिस्थिति में नौकरी प्राप्त करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ उसका रोजगारोन्मुख होना भी जरुरी है। ऐसा नहीं है कि शिक्षा अब सस्ती रह गई है। प्री-स्कूल के समय से ही देखें तो आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बच्चों के स्कूल की फीस देने में चली जाती है। यह खर्च तब सर्वाधिक होता है जब बच्चे 15-22 वर्ष की अवस्था के होते हैं।

ताकि बच्चों के भविष्य की न सताए चिंता

अगर आप निवेश की शुरुआत जल्दी करते हैं और नियमित तौर पर करते हैं तो कोष निर्माण में चक्रवृद्धि ब्याज की मदद मिलती है। पढ़ाई के लिए बड़ी राशि की जरूरत होती है इसलिए आपको निवेश के लिए दीर्घावधि के किसी ऐसे विकल्प का चुनाव करना चाहिए जो अच्छा रिटर्न देता हो।

आम तौर पर लोग पांच, 10 साल या उससे अधिक समय के लिए निवेश करते हैं। इक्विटी निवेश का एक ऐसा विकल्प है जिसमें समय के साथ जोखिम कम होता जाता है और यह बात ऐतिहासिक तौर पर साबित हो चुकी है कि दीर्घावधि में इक्विटी सबसे बेहतर रिटर्न देते हैं।

जल्दी करें निवेश की शुरुआत

जब बच्चे छोटे हों तभी से उनकी पढ़ाई-लिखाई के लिए निवेश की शुरुआत करना लाभकारी है। अगर आप निवेश की शुरुआत जल्दी करते हैं और नियमित तौर पर करते हैं तो कोष निर्माण में चक्रवृद्धि ब्याज की मदद मिलती है। पढ़ाई के लिए बड़ी राशि की जरूरत होती है इसलिए आपको निवेश के लिए दीर्घावधि के किसी ऐसे विकल्प का चुनाव करना चाहिए जो अच्छा रिटर्न देता हो। बेहतर यह होगा कि आप प्रत्येक महीने एक निश्चित राशि बच्चों की पढ़ाई के लिए अलग कर लें। जल्दी शुरुआत करने से आप फायदे में रहेंगे नहीं तो संभव है कि इस लक्ष्य के लिए आपको अपने दूसरे लक्ष्यों की कुर्बानी देनी पड़े।

समय-सीमा, महंगाई और इक्विटी में निवेश

एक फाइनेंशियल प्लानर ने बताया कि आप यह देख लें कि आपके पास कोष निर्माण के लिए कितना समय है। समय सीमा जितनी अधिक होगी, नियमित तौर पर उतने ही कम पैसे निवेश करने होंगे। लेकिन महंगाई निवेश पर मिलने वाले रिटर्न को कम कर देती है। इसलिए निवेश के ऐसे विकल्प का चयन करना ठीक रहेगा जो महंगाई को मात देने में सफल रहे हैं।

बच्चों के भविष्य के लिए की जाने वाली बचत कम अवधि की नहीं होती है। आम तौर पर लोग पांच, 10 साल या उससे अधिक समय के लिए निवेश करते हैं। इक्विटी निवेश का एक ऐसा विकल्प है जिसमें समय के साथ जोखिम कम होता जाता है और यह बात ऐतिहासिक तौर पर साबित हो चुकी है कि दीर्घावधि में इक्विटी सबसे बेहतर रिटर्न देते हैं। अच्छे शेयरों का चयन कर उसमें निवेश करने के लिए निवेशकों को शेयर बाजार की समझदारी तो होनी ही चाहिए, इसके अतिरिक्त अच्छी ग्रोथ वाली कंपनियों के चुनाव करने की विशेषज्ञता भी होनी चाहिए। अगर, ऐसा संभव नहीं हो पाता है तो फिर बिना झंझट के किसी अच्छे ट्रैक रिकॉर्ड वाले इक्विटी म्यूचुअल फंड में लंबे समय के लिए निवेश कर बच्चों की पढ़ाई या शादी-विवाह के लिए पर्याप्त धन-कोष बनाया जा सकता है। ऐतिहासिक तौर पर यह साबित हो चुका है कि इक्विटी के निवेश में छुपा जोखिम समय के साथ कम होता जाता है।

कहां करें निवेश

निवेश की शुरुआत शीघ्र करने से आप अपेक्षाकृत अधिक जोखिम वाले निवेश के विकल्पों का भी चुनाव कर सकते हैं ताकि प्रतिफल प्राप्त हो। म्यूचुअल फंड के भी कई विकल्पों- ऋण, इक्विटी और बैलेंस्ड फंड में से किसी एक का चुनाव किया जा सकता है। इंदौर स्थित प्रीमियम वेल्थ मैनेजर्स के सर्टिफायड फाइनेंशियल प्लानर नवनीत धवन कहते हैं कि वैसे निवेशक जो समय-समय पर अपने निवेश की समीक्षा नहीं क र सकते हैं उन्हें बैलेंस्ड फंड का चुनाव करना चाहिए। बैलेंस्ड फं ड इक्विटी और ऋण में अपना आवंटन करते हैं और दीर्घावधि में इसके रिटर्न भी अच्छे रहे हैं।

बच्चों की शिक्षा संबंधी जरुरतों के लिए म्यूचुअल फंडों की सिप योजना उपलब्ध सभी विकल्पों में श्रेष्ठ है। सिप पर शेयर बाजार के उतार-चढ़ावों का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है और यह नियमित निवेश की आदत भी डालता है। इसके अलावा डेट में पब्लिक प्रोविडेंट फंड और वर्तमान में अधिक जमा दर की पेशकश करने वाले बैंकों के फिक्स्ड डिपॉजिट में भी निवेश कर सकते हैं।

गोल्ड में गिरावट आने का अभी करें इंतजार

बिजनेस भास्कर • नई दिल्ली

घरेलू बाजार में सोने की कीमतों में भारी तेजी बनी हुई है। दिल्ली सराफा बाजार में शुक्रवार को सोने का भाव बढ़कर 29,750 रुपये प्रति दस ग्राम के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर जून महीने के वायदा अनुबंध में जनवरी से अभी कीमतों में 4.3 फीसदी की तेजी आ चुकी है। रुपये के मुकाबले डॉलर मजबूत बना हुआ है। जबकि अमेरिका की अर्थव्यवस्था में पहले की अपेक्षा सुधार आया है। ऐसे में वायदा कारोबार में निवेशकों को सोने की मौजूदा कीमतों में गिरावट के बाद ही निवेश करना बेहतर होगा।

एमसीएक्स पर जून महीने के वायदा अनुबंध में सोने की कीमतें बढ़कर शुक्रवार को 29,197 रुपये प्रति दस ग्राम पर कारोबार करते देखी गई। जबकि पहली जनवरी को जून महीने के वायदा अनुबंध में इसका भाव 27,991 रुपये प्रति दस ग्राम था। जून महीने के वायदा अनुबंध में 14,187 लॉट के सौदे खड़े हुए हैं। ब्रोकिंग फर्म एंजेल कमोडिटी के एसोसिएट डायरेक्टर (कमोडिटी एंड करेंसी) नवीन माथुर ने बताया कि डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर होने से भारत में सोने की कीमतों में बढ़ोतरी हो रही है। हाजिर और वायदा बाजार में सोने के दाम उच्चतम स्तर पर बने हुए हैं इसलिए निवेशकों को गिरावट का इंतजार करना चाहिए। जिन निवेशकों ने नीचे भाव में निवेश कर रखा है उन्हें भी मुनाफावसूली कर लेनी चाहिए।

एसएमसी इंवेस्टमेंट एंड एडवाइजर्स लिमिटेड के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक डी. के. अग्रवाल ने बताया कि अमेरिका की अर्थव्यवस्था में धीरे-धीरे सुधार आ रहा है। निवेशकों की नजर अमेरिकी रोजगार के आंकड़ों पर लगी हुई है। ईसीबी ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं हुआ है जबकि अमेरिकी डॉलर थोड़ी बढ़त के साथ कारोबार कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमतों में गिरावट आने की संभावना है। जिसका असर घरेलू बाजार में सोने की कीमतों पर पड़ेगा। ऐसे में निवेशकों को वायदा बाजार

में मौजूदा स्तरों पर सोने में निवेश से बचना चाहिए। सोने की कीमतों में 1,000 से 1,500 रुपये प्रति दस ग्राम की गिरावट आए तभी निवेश करना उचित रहेगा। उन्होंने कहा कि भविष्य में तो सोने की कीमतों में तेजी रह सकती है लेकिन सीमित अवधि के लिए इसकी कीमतों में गिरावट आ सकती है। ऋद्धि सिद्धि बुलियंस लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर पृथ्वीराज कोठारी के अनुसार, कई विशेषज्ञों का मानना है कि गोल्ड अभी बुलबुले की स्थिति में है। जबकि बात ऐसी नहीं है। दीर्घावधि में विश्व भर के केंद्रीय बैंक मुद्रा की छपाई करेंगे क्योंकि उनके पास दूसरा चारा नहीं होगा। दूसरी तरफ मुद्राओं की खरीद की ताकत घटती जाएगी। लंबे समय में सोने और चांदी की कीमतों में तेजी ही दिखाई देगी।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में जनवरी से अभी तक सोने की कीमतों में 5.2 फीसदी की तेजी आ चुकी है। दो जनवरी को अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने का भाव 1,550 डॉलर प्रति औंस था जबकि शुक्रवार को 1,631 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करते देखा गया। दिल्ली बुलियन वेलफेयर ज्वैलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष वी के गोयल ने बताया कि घरेलू बाजार में सोने की ऊंची कीमतों का असर मांग पर पड़ रहा है। गहनों की मांग में महीने भर में करीब 25 से 30 फीसदी की कमी आई है। घरेलू बाजार में सोने की कीमतें डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर होने से भी बढ़ रही है।

आपका फीडबैक
9999440366
पर एसएमएस के जरिए खबरों पर आप अपना फीडबैक भेज सकते हैं

सूचना

इस पेज पर रोजाना पर्सनल फाइनेंस से जुड़ी गुत्थियों को सुलझाया जाता है।

- मनी मंत्र- शनिवार
- मेरा पैसा मेरा शेयर- सोमवार
- मेरा पैसा मेरा बीमा- मंगलवार
- मेरा पैसा मेरी जायदाद- बुधवार
- कर्ज से कमाई- गुरुवार
- मेरा पैसा मेरा फंड- शुक्रवार

अगर आपकी भी कोई समस्या है या फिर कोई सुझाव देना चाहते हैं, तो हमें पत्र जरूर लिखें। आप हमें ईमेल और एसएमएस भी कर सकते हैं। हमारा पता है-

बिज़नेस भास्कर
2ई/22, लोअर ग्राउंड फ्लोर,
झंडेवालान एक्सटेंशन, (स्वामी रामतीर्थ नगर)
नई दिल्ली-110055
E-mail - editor@businessbhaskar.net
-संपादक

(डिसक्लेमर : संबंधित कंपनियों का आकलन निवेश सलाहकारों और ब्रोकिंग रिसर्च फर्मों ने शोध के आधार पर किया है। निवेश से पहले जोखिम का आकलन खुद भी करें। नुकसान व जोखिम आदि के लिए डीबी कॉर्प लिमिटेड जिम्मेदार नहीं होगी।)

समाधान — **जितेंद्र सोलंकी,** सर्टिफायड फाइनेंशियल प्लानर, जे. एस. फाइनेंशियल एडवाइजर्स, दिल्ली

रिवर्स मॉर्गेज की कुछ खास स्कीमों का ले सकते हैं लाभ

मैं एक अनिवासी भारतीय हूं और भारत में रह रहे अपने माता-पिता के लिए रिवर्स मॉर्गेज स्कीम लेना चाहता हूं। क्या यह एक अच्छा विकल्प होगा?

-अनुपम, लुधियाना

-अभी तक भारत में इस तरह की योजनाएं वरिष्ठ नागरिकों के बीच ज्यादा लोकप्रिय नहीं हैं। वजह है भुगतान की सीमित अवधि और घर के साथ जुड़ी उनकी भावनाएं। इसे ठीक करने के लिए सेंट्रल बैंक और इंडिया ने स्टार यूनियन दाईची लाइफ इंश्योरेंस के साथ मिलकर एक रिवर्स मॉर्गेज प्रोडक्ट लांच किया जिसमें कर्जदारों को आजीवन एन्युटी दिए जाने की व्यवस्था है। इस स्कीम के तरह 60 साल या फिर इससे ज्यादा उम्र के व्यक्ति अपने 55 साल से ज्यादा के जीवनसाथी के साथ मिल कर अपने सेल्फ ऑक्यूपाइड घर के ऊपर लोन ले सकते हैं। बैंक कर्जदारों की उम्र को देखते हुए, घर के वास्तविक मूल्य पर कर्ज देता है। इस प्रोडक्ट की खास बात यह है कि स्टार यूनियन दाईची लाइफ इंश्योरेंस के माध्यम से बैंक पति और प ी दोनों को लोन के प्री-मैच्योर पेमेंट के बावजूद एन्युटी दे रही है। मौजूदा स्कीमों से तुलना करें तो यह स्कीम सच में बेहतर है। इसमें केवल एक कमी यह है कि लोन रीपेमेंट की राशि अन्य स्कीम की तुलना में काफी ज्यादा है। हालांकि अगर यह केवल आय के उद्देश्य से खरीदी जा रही है तो फायदेमंद है। इस बारे में ज्यादा जानकारी आप बैंक से ले सकते हैं।

मैं भारतीय नौसेना में कार्यरत हूं और 15 साल बाद अपनी सेवाओं से मुक्त होना चाहता हूं। मेरी एक और दो साल की दो बेटियां हैं जिन्हें मैं डॉक्टर बनाना चाहता हूं। मैं इसके लिए प्रति माह 14,000 रुपये बचा रहा हूं। कृपया मुझे बताएं कि इसके लिए मुझे कितनी राशि की जरूर पड़ेगी। फिलहाल तो मैं फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) और पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) में निवेश कर रहा हूं।

-बलवंत सिंह

लंबी अवधि में पैसे बचाने के लिए सही एसेट क्लास का चयन बहुत जरूरी है। इक्विटी लंबे समय में आपको महंगाई से ज्यादा का रिटर्न देता है यही कारण है कि इसमें ज्यादा आवंटन किया जाना चाहिए। हालांकि जो लोग पहली बार निवेश कर रहे हैं उनके लिए इक्विटी और डेट वाले बैलेंस्ड फंडों में निवेश करना उपयुक्त है। अगर आपके अनुसार शिक्षा की लागत मौजूदा समय में 15 लाख रुपये है तो बच्चियों के 16 साल की उम्र तक पहुंचने पर आपको क्रमशः 62.65 लाख रुपये और 59.96 लाख रुपये की जरूरत पड़ेगी। इसमें सालाना 10 फीसदी का लागत इजाफा भी शामिल है। इसे इकट्ठा करने के लिए आपको प्रतिमाह करीब 27,662 रुपये का निवेश करना होगा। अगर आपको निवेश पर सालाना 12 फीसदी का रिटर्न मिलता है तो लक्ष्य पाना आसान रहेगा। आप इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए पीपीएफ में निवेश करेंगे तो हो सकता है कि आपके निवेश में कमी आ जाए। आप लक्ष्य को पूरा करने के लिए या तो अपनी लक्षित राशि की रकम को कम कीजिए या फिर इसकी कमी को लोन से पूरा कर लीजिए। लोन के साथ एक अच्छी बात यह है कि आपके बच्चे नौकरी कर के इसका भुगतान कर सकते हैं। हालांकि, किसी भी तरह की बचत करने से पहले आपको देखना होगा कि आपातकालीन स्थिति कि लिए आपके पास पर्याप्त कवर है या नहीं। वैसे तो इसमें से ज्यादातर खर्चों का भुगतान नियोक्ता द्वारा ही कर दिया जाएगा। इसके बावजूद क्योंकि आप अपनी सेवाओं को छोड़ना चाहते हैं तो इसके बाद के सालों के लिए आपको पर्याप्त उपाय करने होंगे।

मेरी उम्र 34 साल है। मैं एक सरकारी कर्मचारी हूं और मेरा वेतन 20,000 रुपये प्रति माह है। बच्चे की शिक्षा और शादी के लिए मुझे आज से 15 और 20 साल बाद पैसों की जरूरत होगी। साथ ही 26 साल बाद मुझे अपने रिटायरमेंट के लिए भी पैसे चाहिए होंगे। मुझे अपनी निवेश योजना किस प्रकार बनानी चाहिए?

-कीमत लाल, विलासपुर

किसी भी तरह का निवेश करने से पहले आपको आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने की योजना पहले बना लेनी चाहिए। एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते आपको कुछ सुविधाएं सरकार की तरफ से मिली होंगी जैसे हेल्थ इंश्योरेंस। आपको सबसे पहले अन्य अप्रत्याशित घटनाओं के लिए उचित व्यवस्था करते हुए चलना चाहिए। इसके बाद आप अपने विभिन्न आर्थिक लक्ष्यों की पहचान करें कि आपको कितने समय बाद किस काम के लिए कितने पैसे चाहिए होंगे? इससे आपको प्रत्येक लक्ष्य के लिए निवेश की राशि तय करने में मदद मिलेगी। यह काम तब ज्यादा आसान हो जाएगा जब आपके पास निवेश के लिए पर्याप्त राशि बचती है। हालांकि, विभिन्न लक्ष्यों को देखते हुए अक्सर यह संभव नहीं हो पाता है कि एक साथ सभी लक्ष्यों के लिए निवेश किया जाए और इसी क्रम में हम किसी खास लक्ष्य को नजरअंदाज करने की भूल कर जाते हैं। अगर इस तरह की कोई समस्या है तो प्रत्येक लक्ष्य की पहले तरजीह तय करें और बुद्धिमानी से निवेश के विकल्पों का चयन करें। निवेश की शुरुआत आप कम पैसों से भी कर सकते हैं और जैसे-जैसे आपकी आय में इजाफा होता है आप निवेश की राशि भी बढ़ाते जाइए। नौकरी की समाप्ति के बाद सरकार की तरफ से आपको जो पेंशन मिलेगा उससे आपको कम पैसों की बचत के जरिये अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग में मदद मिलेगी।